7

''जैसा बाप, वैसा बेटा''?

(मत्ती 5:9)

बाइबल की शानदार खूबियों में से एक इसकी ताज़गी और सजीवता यानी यह तथ्य है कि यह आधुनिक ही रहती है और हर युग में प्रासंगिक है। इस धन्य वचन से बढ़कर हमारे युग में कोई और वचन आवश्यक हो सकता है: ''धन्य हैं वे, जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे'' (मत्ती 5:9) ? इस वचन का अध्ययन कभी भी कर लो,[1] परदेशी-परदेशियों को मार रहे होंगे, पड़ोसी-पड़ोसियों को मार रहे होंगे, भाई-भाइयों का कत्ल कर रहे होंगे, धार्मिक गुट एक-दूसरे को नष्ट करने की कोशिश कर रहे होंगे, और एक देश दूसरे देशों को मिटाने की कोशिश कर हरे होंगे।[2] नफ़रत और लड़ाई के बीच यह धन्य वचन एक ताज़ा झोंके रूप में आता है: ''धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।''

यह हमेशा स्पष्ट नहीं होता कि धन्य वचनों में से कुछ किस प्रकार प्रसन्नता से जुड़े हैं पर इस धन्य वचन को जोड़ने में हमें कोई दिक्कत नहीं है। शत्रुता और अशान्ति के दौरान प्रसन्न होना कठिन है, पर प्रसन्न हैं वे लोग जो मेल या शान्ति को बढ़ाने का काम करते हैं। इस पर विचार करें। क्या प्रसन्न लोग चिड़चिड़े, बदला लेने को उतारू या झगड़ा उत्पन्न करने को उत्सुक रहते हैं ? ऐसे लोग तरस योग्य होते हैं, और उन्हें ''आनन्द'' केवल तभी मिलती है जब वे दूसरों को भी दुखी बना लें। भद्र, कोमल मन, सज्जन लोगों का क्या होता है जो शान्ति से प्रेम रखते और जो अपने घरों में, कलीसिया में और अपने पड़ोसियों और मित्रों में शान्ति को बढ़ावा देने के लिए जो भी कर सकते हों करते हैं ? आप जानते हैं कि इन में से कौन प्रसन्न रहा है। आत्मा का फल, आनन्द और शान्ति मिला लिया जाए तो दोनों का कारण प्रेम होता है (गलातियों 5:22)।

हमारे वचन पाठ पर कई सवाल हैं, जिनका उत्तर दिया जाना आवश्यक है। मेल कराने वाले होने लिए क्या आवश्यक है और ''परमेश्वर के पुत्र'' होने का क्या अर्थ है ? सातवें धन्यवचन के अपने अध्ययन में हम उस वचन में जाएंगे जो उससे थोड़ा अलग है जो हम ने पिछले धन्यवचनों में देखा था। पहले हम आयत के अन्तिम भाग (प्रतिज्ञा) की बात करतें कि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। फिर हम आयत के आरम्भ (शर्त) की चर्चा करेंगे कि ''धन्य हैं वे, जो मेल कराने वाले हैं।'' इससे हमें अपने समय के साथ मत्ती 5:9 को लागू करने के साथ निष्कर्ष निकालना आसान होगा।

''... क्योंकि वे परमेमश्वर के पुत्र कहलाएंगे।''

सभी धन्य वचनों की तरह मेल कराने वाले होने का धन्य वचन या प्रसन्नता का मुख्य स्रोत इस प्रतिज्ञा में मिलता है कि ''क्योंकि वह परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।'' KJV में है ''क्योंकि वे परमेश्वर की संतान कहलाएंगे,'' पर अनुवादित शब्द ''संतान'' ''पुत्र'' के लिए यूनानी शब्द

(*huios*) का बहुवचन है। यहां इस्तेमाल शब्द का सामान्य अर्थ दोनों के लिए यानी परमेश्वर के बेटे-बेटियों दोनों के लिए है।[3] कितनी अनोखी प्रतिज्ञा है: परमेश्वर के बेटे और बेटियां कहलाना, राजा के बेटे और बेटियां कहलाना, संसार के सृष्टिकर्त्ता के बेटे और बेटियां होना!

यह प्रतिज्ञा रोमांचकारी है पर हमें ''परमेश्वर के पुत्र'' के वाक्यांश को समझना आवश्यक है। ''का पुत्र'' एक इब्रानी अभिव्यक्ति है जिसका अर्थ ''के स्वभाव वाला'' है। बरनबास को ''शान्ति का पुत्र'' (प्रेरितों 4:36) कहा जाता था। क्योंकि दूसरों को शान्ति देना उसका स्वभाव था। ''परमेश्वर के पुत्र'' का अर्थ वे लोग हैं जो परमेश्वर के स्वभाव वाले हैं। एक कहावत है ''जैसा बाप, वैसा बेटा'' परमेश्वर की संतान के रूप में हमारे लिए यह चुनौती है (देखें मत्ती 5:48)। हमारे वचन पाठ में ''परमेश्वर के पुत्र'' वाक्यांश विशेष रूप से उनके लिए है जो मेल कराने वाले होने के परमेश्वर के स्वभाव वाले हैं।

ईश्वरीय मेल कराने वाला

नीतिवचन 6:16-19 के अनुसार, ''छह वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन सात हैं जिन से उसको घृणा है।'' वह सातवीं बात ''भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करने वाला मनुष्य'' है। परमेश्वर झगड़े से नफरत करता और शान्ति से प्रेम रखता है। उसे ''शान्ति का परमेश्वर'' कहा जाता है (रोमियों 15:33)। उसने संसार को बनाया जो पाप द्वारा फूट और मृत्यु लाने से पहले शान्ति से भरा हुआ था। उस शान्ति को बहाल करने के लिए उसने अपने पुत्र को, ''अपने इकलौते पुत्र को'' पाप के बीमार, इस अशांत संसार में भेजा (देखें यूहन्ना 3:16)।

यह समझने के लिए कि परमेश्वर शान्ति से कितना प्रेम रखता है, हमें केवल उसके पुत्र, यीशु को देखना पड़ेगा (देखें यूहन्ना 14:9)। यह भविष्यवाणी की गई थी कि मसीह ''शान्ति का राजकुमार'' (यशायाह 9:6) होगा। उसके जन्म पर ''महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति'' (लूका 2:14) होनी थी। अपनी मृत्यु से थोड़ा पहले उसने अपने चेलों को बताया था, ''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं'' (यूहन्ना 14:27क)। अपनी मृत्यु के द्वारा उसने यहूदियों (जो निकट थे) और अन्य जातियों (जो दूर थे) दोनों को मिला दिया (इफिसियों 2:16, 17; देखें कुलुस्सियों 1:20)।

अपने पिता की नकल करना

मुझे और आपको परमेश्वर और यीशु के जैसे बनने की चुनौती मिली है। ''सबसे मेल मिलाप रखने'' (इब्रानियों 12:14; देखें 2 तीमुथियुस 2:22); ''... हम उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल मिलाप और एक-दूसरे का सुधार हो'' (रोमियों 14:19)।

यदि हम मेल का पीछा करते हैं तो हमें ''परमेश्वर के पुत्र'' कहा जाएगा। ह्यूगो मेकोर्ड ने लिखा:

> सृष्टि के द्वारा सब लोग ''परमेश्वर का पुत्र'' (उत्पत्ति 6:2; लूका 3:38), परन्तु शैतान द्वारा फंसाए जाने से, मनुष्य उन कुछ स्वर्गदूतों की तरह हैं जिन्होंने ''अपने पद को स्थिर न रखा'' (यहूदा 6) और अब उपयुक्त रूप में और ईश्वरीय रूप में ''शैतान की संतान कहलाते हैं'' (यूहन्ना 8:44; प्रेरितों 13:10)।[4]

परन्तु यदि हम मेल कराने वाले हैं तो हम ''परमेश्वर के पुत्र'' कहलाएंगे।

हमें परमेश्वर के पुत्र *कौन* कहेगा। कई बार दूसरे लोग कहेंगे। जब हम दो भाइयों को मिलाने में सहयोग करते हैं या घर में शान्ति बहाल करने में सहायता करते हैं तो उसमें शामिल लोग आम तौर पर हमेशा अभारी होते हैं। परन्तु इस बात को समझें कि हमेशा ऐसा नहीं होता। कई बार शान्ति बहाल करने के प्रयास सराहे नहीं जाते। पुलिस के अधिकारी आम तौर पर कहते हैं कि सबसे खतरनाक परिस्थितियां जिनसे वे निपटते हैं वे घरेलू झगड़े ही होते हैं। उदाहरण के लिए यदि पुलिस किसी आदमी को अपनी पत्नी को पीटने से रोकने की कोशिश करती हैं, तो पति और पत्नी दोनों अधिकारियों पर सवार हो जाएंगे। इसी प्रकार से भली मंशा से किया गया शान्ति बहाली का हमारा प्रयास हस्तक्षेप माना जा सकता है। इसके अलावा यदि हम किसी झगड़े में किसी एक का पक्ष लेने से इनकार कर दें तो दोनों ओर के लोग हमारे ऊपर आक्रमण कर रहे हो सकते हैं। यही कारण कि मैंने कहा कि यदि हम मेल कराने वाले हैं तो कई बार लोग हमें ''परमेश्वर के पुत्र'' कहेंगे पर हमेशा नहीं। पर मेल कराने वालों को ''परमेश्वर के पुत्र'' कौन कहेगा? *परमेश्वर* कहेगा। वह मेल कराने वालों को अपनी सन्तान के रूप में मान लेगा।

बेशक अपनी सन्तान के रूप में कहलवाने के लिए परमेश्वर केवल मेल करवाने वाले होने की मांग नहीं करता। यीशु यह नहीं कह रहा था कि यदि हम संसार में शान्ति बहाल करने के कठिन प्रयास करें तो हम अपने आप ही परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं। हम परमेश्वर के परिवार में हुए बिना परमेश्वर की सन्तान नहीं बन सकते, क्योंकि परिवार में होने के लिए इसमें ''जन्म'' लेना आवश्यक है: यानी ''सच्चाई से आज्ञा पालन'' (देखें 1 पतरस 1:22) ''जल और आत्मा से जन्मे'' (यूहन्ना 3:3, 5)। इस आज्ञापालन में यीशु में विश्वास और भरोसे के साथ साथ बपतिस्मा भी शामिल है। पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि तुम सब उस *विश्वास करने के द्वारा* जो मसीह यीशु पर है, *परमेश्वर की सन्तान* हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में *बपतिस्मा लिया* है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है'' (गलातियों 3:26, 27)। जब हम विनम्र आज्ञापालन में प्रभु के पास आते हैं तो परमेश्वर हमें अपनी कलीसिया में मिला लेता है (प्रेरितों 2:47; KJV) जो कि उसका ''घराना'' (देखें 1 तीमुथियुस 3:15; ''परिवार''; मेकोर्ड)। जब तक हम वह नहीं करते जो मसीही बनने के लिए हम से करने को कहा गया है तब तक हम परमेश्वर के बेटे और बेटियां नहीं बन सकते। नया जन्म पाने और परमेश्वर की सन्तान होने पर भी यदि हम उसके स्वभाव वाले और मेल कराने वाले नहीं बनते तो हम ''परमेश्वर के पुत्रों'' जैसा व्यवहार नहीं कर रहे हैं।

मेल कराने वाले *कब* ''परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे''? मैं एक बार फिर यह सुझाव देना चाहता हूं कि इस जीवन में इसका आंशिक रूप में पूरा होना और आने वाले जीवन में पूर्ण रूप में पूरा होना है। इस जीवन के सम्बन्ध में पौलुस ने मसीही लोगों को बताया, ''तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को हमारे हृदय में भेजा है'' (गलातियों 4:6)।[5] एक अर्थ में हम पहले से परमेश्वर के पुत्र हैं पर ''पुत्र कहलवाने'' की प्रक्रिया तब तक पूरी नहीं होगी जब तक हम स्वर्ग में पिता के साथ नहीं होते। पौलुस ने ''महिमा जो प्रगट होने वाली है'' और हमारे ''लेपालक होने की बाट जोहने'' की बात लिखी है (रोमियों 8:18, 23; आयत 19 भी देखें)।[6] स्वर्ग में लोगों की स्थिति बताते हुए यीशु ने कहा कि वे अब न मरेंगे ''क्योंकि वे

स्वर्गदूतों के समान होंगे, और परमेश्वर के भी संतान होंगे'' (लूका 20:36)। यहां की बात करें या वहां की, इससे अधिक रोमांचकारी प्रतिज्ञा की कल्पना करना कठिन है कि परमेश्वर हमें अपनी संतान यानी अपने बेटे और बेटियों के रूप में मान लेगा!

''धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं ...।''

इस प्रतिज्ञा को देखकर हमें मेल कराने वाले होने की शर्त की इच्छा और भी अधिक होनी चाहिए। मेल कराने वाले होने में क्या शामिल है? ''मेल कराने वाला'' शब्द का अनुवाद *eirenopoios* से लिया गया है जो ''मेल'' (*eirene*) के साथ ''कराना'' (*poieo*) के अर्थ वाले शब्द को मिलाता है। नये नियम में यह जोड़ कहीं नहीं मिलता[7] पर ''शान्ति'' *eirene* के लिए शब्द अस्सी से अधिक बार हो जाता है।[8] आइरीन का अर्थ ''सद्भावनापूर्ण सम्बन्ध'' और ''विश्राम और संतुष्टि का बोद्ध'' है जो इसके परिणाम के रूप में मिलता है। इससे मेल खाता इब्रानी शब्द *shalom* है।[9] शालोम के सम्बध में विलियम बार्कले ने लिखा है:

> इब्रानी में *शान्ति* कभी भी अकेले नकारात्मक स्थिति नहीं है; इसका अर्थ कभी भी केवल परेशानी का न होना नहीं है; इब्रानी में *शान्ति* का अर्थ हमेशा *वह सब कुछ जो मनुष्य की सबसे बड़ी भलाई को बनाता है*। पूर्व में जब कोई किसी को *सलाम* कहता है, जो कि वही शब्द है, तो उसके कहने का अर्थ यह नहीं होता कि वह दूसरे व्यक्ति के लिए केवल बुरी बातों के न होने की इच्छा करता है; उसके लिए सब अच्छी बातों के होने की इच्छा करता है।[10]

''मेल'' शब्द को ''मेल कराने वाले'' शब्द से तोड़ा नहीं जा सकता, पर ''कराने वाला'' शब्द को नज़रअन्दाज़ न करें। सातवां धन्यवचन निराला है। अधिकतर धन्यवचनों में ज़ोर व्यवहार पर अधिक है, जबकि कुछ एक में ही ज़ोर व्यवहार के साथ-साथ कार्य पर भी है; पर इस धन्य वचन में ध्यान *कार्य करने* पर है। सही व्यवहार को मान लिया जाता है हमारे वचन पाठ में परमेश्वर की प्रतिज्ञा उन लोगों के लिए है जो सक्रिय रूप में शान्ति की तलाश करते हैं। प्रभु ने *शान्ति-प्रेमियों* (चाहे यह सराहनीय हैं) या शान्ति की बातें करने वालों (जिसकी कई बार आवश्यकता होती है) नहीं बल्कि शान्ति यानी मेल *कराने वालों* को आशीष देने की प्रतिज्ञा की है।

परमेश्वर ने उन्हें आशीष देने की प्रतिज्ञा *नहीं* की है जो ''किसी भी कीमत पर शान्ति'' में यकीन रखते हैं। कइयों को शान्त और शान्ति प्रेमी माना जाता है, क्योंकि वे किसी भी कीमत पर गड़बड़ से बचते हैं। आने वाली परेशानी का सामना और उससे पेश आने के बजाय वे इसे नज़रअन्दाज करते हैं और उम्मीद करते हैं कि यह अपने आप चली जाएगी। आम तौर पर यह जाती नहीं है और अन्त में उससे कहीं बड़ी समस्या बन जाती है जितनी आरम्भ में थी। इस सम्बन्ध में परमेश्वर ने निश्चित रूप में उन्हें आशीष देने की प्रतिज्ञा नहीं की। जिनके लिए शान्ति उसके और उसके वचन के वफ़ादार होने से अधिक प्राथमिकता वाली है। याकूब ने लिखा कि ''पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह *पहिले* तो पवित्र होता है *फिर* मिलनसार'' (याकूब 3:17) होता है।

मेल या शान्ति के लिए काम करते हुए हमें दीर्घकालीन सोच की समझ होनी आवश्यक है। जब हमारी बेटी सिंडी छोटी थी, तो उसे कई स्वास्थ्य समस्याएं रहती थीं और उसे काफ़ी दवाई देनी पड़ती थी। उसे दवाई से घृणा थी! आज भी यह याद करना कि उसके नन्हे से शरीर को किस प्रकार कस कर पकड़कर हमें ज़बर्दस्ती उसके मुंह में दवाई ठूसनी पड़ती थी (आम तौर पर आधी बाहर आ जाती थी) बड़ा दर्दनाक है। ''हर कीमत पर शान्ति'' यही चाहती होगी कि हम उसे दवाई न दें, क्योंकि दवाई देने के समय हमारे घर में *शान्ति* नहीं होती थी। परन्तु हम दूर की सोचते थे क्योंकि हम उसे स्वस्थ देखना चाहते थे।[11] इसी प्रकार शान्ति के लिए जो प्रभु का आदर करती है, हमें भविष्य को ध्यान में रखना चाहिए।

हमारे लिए समस्याओं का सामना करना और जब ऐसा करना अच्छा न लगे तब भी उससे निपटना आवश्यक है। मेरे भाई ने टिप्पणी की है कि मेल कराने वाला व्यक्ति ''आवश्यकता पड़ने पर झगड़े में लिप्त भी होगा, पर उसे इसमें आनन्द नहीं मिलेगा।''[12] गलत बात के लिए डांटने में भी मेल करने वाले का प्रेम सब को दिखाई दे देगा (देखें इफिसियों 4:15)।

> प्रभु के दास को झगड़ालू होना न चाहिए, पर सब के साथ कोमल और शिक्षा में निपुण, और सहनशील हो। और विरोधियों को नम्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे, कि वे भी सत्य को पहिचानें। और इस के द्वारा उस की इच्छा पूरी करने के लिए सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाए (2 तीमुथियुस 2:24-26)।

इससे हमें कुछ विचार मिल जाना चाहिए कि ''मेल कराने वाला'' शब्द का क्या अर्थ *नहीं* है पर इसका अर्थ *क्या* है? इस शब्द को सुनने से हमारे मन में कई दृश्य आ सकते हैं:[13] मां अपने बच्चों में झगड़ा निपटा रही है, शिक्षक स्कूल के मैदान में हाथा पाई छुड़वा रहा है, अन्तराष्ट्रीय शान्ति सभा में मेज में बैठे पुरुषों और स्त्रियों। यह सब आवश्यक है, पर मैं इससे भी बढ़कर अधार भूत बात से मेल कराने की सकारात्मक पहलू की अपनी चर्चा आरम्भ करना चाहता हूं।

परमेश्वर के साथ मेल

संसार में मेल या शान्ति का आरम्भ मन में शान्ति होना आवश्यक है और मन में शान्ति का आरम्भ परमेश्वर के साथ मेल से होता है। यशायाह ने लिखा है, ''दुष्टों के लिए शान्ति नहीं है, मेरे परमेश्वर का यही वचन है'' (यशायाह 57:21)। परमेश्वर के साथ शान्ति रखने के लिए हमें उसकी इच्छा के आगे अपनी इच्छा को समर्पित करना पड़ेगा (देखें 2 इतिहास 30:8)। अपने आप में भरोसा रखने के बजाय हमें यीशु और उसकी इच्छा में भरोसा रखना होगा। पौलुस ने कहा, ''जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें'' (रोमियों 5:1)। तभी और केवल तभी परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है हमें हृदय और मन की रखवाली करेगी (देखें फिलिप्पियों 4:7)।

फिर मेल कराने वाले होने के लिए हमें परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत मेल से बढ़कर परवाह करने वाले होना आवश्यक है; हमें दूसरों को मेल कराने में सहायता करने की कोशिश भी करना आवश्यक है (2 कुरिन्थियों 5:18, 20)। शान्ति लाने के अधिकतर प्रयासों से मुझे कोई आपत्ति नहीं है पर ऐसा कोई भी प्रयास जिससे मन परिवर्तित न हो पक्का नहीं होगा। यह तो किसी बड़े,

गहरे घाव पर छोटी सी बैंडेज लगा देने जैसा है।[14] बिना मेल के शत्रुता खत्म होना सम्भव है। पति और पत्नी के बीच होने वाला गाली-गलौज पर यदि प्रतिकूल माहौल घर में बना रहे तो वास्तविक शान्ति नहीं होगी।

बाहरी शान्ति पाने के लिए पहले भीतरी शान्ति का होना आवश्यक है। अन्दर और बाहर की पक्की शान्ति पाने के लिए लोगों को अपने मनों और जीवनों को परमेश्वर का सौंपना आवश्यक है। लोगों के प्रभु के निकट आने से वे एक-दूसरे के निकट भी आएंगे।[15] प्राचीन संसार में यहूदियों और अन्यजातियों के बीच में एक गहरी खाई थी जिसे केवल यीशु के द्वारा भरा जा सकता था। इफिसियों 2 अध्याय से इस वचन पर ध्यान दें:

> पर अब तो मसीह यीशु में तुम [अन्यजाति] जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो। क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों [यहूदियों और अन्य जातियों] को एक कर लिया: और अलग करने वाली दीवार [मूसा की व्यवस्था] को जो बीच में थी, ढाह दिया। और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं [मूसा की व्यवस्था], मिटा दिया, कि दोनों [यहूदियों और अन्यजातियों] से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा दोनों को एक देह [इफिसियों 1:22, 23] बनाकर परमेश्वर से मिलाए। और उस ने आकर तुम्हें जो दूर थे [अन्यजाति], और उन्हें जो निकट थे [यहूदी], दोनों को मेल-मिलाप का सुसमाचार सुनाया (आयतें 13-17)।

जैसे यीशु ने यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की खाई को भरा, वैसे ही वह आज लड़ने वाले धड़ों के बीच की खाई को भर सकता है यदि उसके पास आकर उसकी इच्छा के आगे समर्पण कर दें। दूसरों को प्रभु के पास लाने में सहायता करना मेल कराने वाले के लिए आवश्यक है।

दूसरों के साथ मेल

परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत मेल और दूसरों को परमेश्वर से मिलने के लिए प्रोत्साहित करना प्राथमिकता का काम है। परन्तु मेल कराने वाले होने में इतना ही सब नहीं है। परमेश्वर के साथ मेल होना हमें दूसरों के साथ शान्ति से रहने की पूरी कोशिश करने के लिए प्रोत्साहित करने वाला होना चाहिए। यीशु ने अपने चेलों से "आपस में मेल मिलाप से" रहने को कहा (मरकुस 9:50)। पौलुस ने लिखा, "निदान, हे भाइयो, ... ढाढ़स रखो; एक ही मन रखो; मेल से रहो, और प्रेम और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हारे साथ होगा" (2 कुरिन्थियों 13:11)।

रोमियों 14:19 में पौलुस ने उस वाक्यांश का इस्तेमाल किया जो मेरा ध्यान खींचता है: "इसलिए हम *उन बातों का* प्रयत्न करें *जिनसे मेल मिलाप हो*।" पौलुस ने यह नहीं बताया कि वे "बातें जिनसे मेल मिलाप हो" का क्या अर्थ था; उसे उम्मीद थी कि उसके पाठकों को मालूम है कि उसके मन में क्या है। यदि आप उन "बातों" की जिन से *मेल मिलाप हो* और वे बातें जिनसे शान्ति *भंग* होती है सूची बनानी हो आप उस सूची में क्या क्या डालेंगे।[16] आपकी सूची में ये बातें हो सकती हैं।[17]

- दूसरों से प्रेम करने से मेल मिलाप होता है, जबकि बेपरवाही वाला व्यवहार मेल खत्म करता है।
- दूसरों के साथ दयालु होने से मेल मिलाप होता है, जबकि कठोरता से मेल खत्म होता है।
- दूसरों की सहायता करने से मेल मिलाप होता है जबकि दूसरों की आवश्यकताओं की अनदेखी करने से मेल मिलाप खत्म होता है।
- सुनहरी नियम को मानने से मेल मिलाप होता है (मत्ती 7:12) जबकि दूसरों के साथ व्यवहार के ढंग पर विचार न करने से मेल खत्म होता है।
- एकता के लिए मज़बूत इच्छा रखने से मेल बढ़ता है, जबकि स्वभाव से मेल खत्म होता है।
- प्रेमपूर्वक और प्रेमी आसानी से मिल जाना मेल मिलाप को बढ़ाता है जबकि दूसरों की बात न मानने वाले होने से मेल को धक्का लगता है।
- जब हम गलती करते या हमारा अपराध किया जाता है तो दूसरों के पास जाने का साहस (देखें मत्ती 5:23, 24; 18:15) बढ़ाता है जबकि ऐसा न करने से झगड़ा बढ़ता है।
- बुराई का बदला भलाई देने से (देखें रोमियों 12:20, 21) मेल मिलाप बढ़ता है जबकि बदला लेने की इच्छा शान्ति की सारी उम्मीद खत्म कर देती है।
- हमें अपने विरोधियों को भी मित्र बनाने की कोशिश करनी चाहिए (देखें मत्ती 5:25; नीतिवचन 16:7)।[18]

सूची बनाते समय शायद हमें सबसे ऊपर अपने बजाय दूसरों की चिन्ता करने के गुण को रखना चाहिए। यीशु की सबसे कठिन बातों में से यह है ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो *अपने आप का इन्कार करे* और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले'' (मत्ती 16:24)। डी. मार्टिन लॉयड-जोन्स ने लिखा:

> हमारी परेशानियों की व्याख्या, मानवीय लालसा, लोभ, स्वार्थ, खुदगर्जी है ...। हम हर चीज़ को ऐसे देखते हैं जैसे वह हमें प्रभावित करती है ...। यह मुझे कैसे प्रभावित करती है? मेरे साथ क्या करती है?'' यही सोच है जो हमेशा झगड़ों, न समझियों और विवादों का कारण बनती है और मेल कराने वाले में यह नहीं होती।[19]

जब शान्ति भंग हो जाती है और झगड़ा बढ़ जाता है, तो हम समस्या के केन्द्र में जा सकते हैं, बिना शक आपको एक या अधिक व्यक्ति मिल ही जाएंगे जो अपने ऊपर अधिक ध्यान देते हैं। हो सकता है उन्हें लगता हो कि उन्हें वह नहीं मिला जिसके वे हकदार हैं, या हो सकता है कि उन्होंने अपनी मर्जी करने का निर्णय लिया हो।

मेल कराने वाले होने में निस्वार्थपन के महत्व के कई बाइबल उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए अब्राहम ने अपने भतीजे लूत से कहा, ''मेरे और तेरे बीच, और मेरे और तेरे चरवाहों के बीच में झगड़ा न होने पाए; क्योंकि हम लोग भाई बन्धु हैं'' (उत्पत्ति 13:8)। फिर उसने लूत

को उसकी पसन्द की ज़मीन दे दी (आयतें 9-12)। बेशक पहली पसन्द का अधिकार उसका अपना था और उदाहरण दिए जा सकते हैं: इसहाक, जिसने ''धन से बढ़कर शान्ति को चाहा''[20] (देखें उत्पत्ति 26:17-22) और योनातान जिसने निस्वार्थ होकर अपने मित्र और अपने पिता के बीच में सुलह करवाने की कोशिश की (देखें 1 शमुएल 18:1; 19:2-6; 20:30-33)। परन्तु निस्वार्थ मेल कराने वाले का पक्का उदाहरण यीशु है। कुलुस्सियों 1:20 में पौलुस ने लिखा कि यीशु ''के क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेल मिलाप'' हुआ है। ''मेल मिलाप'' शब्द ''मेल कराने वाले'' के लिए शब्द के क्रिया रूप से लिया गया है। इस वचन में पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि यीशु एक मेल कराने वाला था। मेल कराने वाले के रूप में, अपने अधिकारों पर ज़ोर देने के बजाय उसने पृथ्वी पर आने के लिए (देखें फिलिप्पियों 2:5-8) अर्थात परमेश्वर और मनुष्य के बीच और मनुष्य और मनुष्य के बीच मेल करवाने के लिए अपने अधिकारों को त्याग दिया।[21] शान्ति लाने के लिए यीशु क्रूस पर कीलों से ठोके जाने को भी तैयार था। असली मेल कराने वाला, निस्वार्थ मेल कराने वाला वही है।

हम में वे सारे गुण होने और दूसरों के साथ शान्ति से रहने की हमारी हर कोशिश के बावजूद कुछ लोग हमारे साथ शान्ति से रहने से इनकार करेंगे। रोमियों 12:18 में हम पढ़ते हैं, ''जहां तक हो सके, *तुम अपने आस पास* सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।'' हर किसी के साथ मेल मिलाप रखना असम्भव है। हम सम्बन्ध का केवल एक भाग यानी अपने वाला भाग नियन्त्रण में रख सकते हैं। परन्तु हमें चाहिए कि ''सब लोगों के साथ मेल मिलाप से रहने के लिए'' *हम* जो भी कर सकते हों करें।

दूसरों के साथ मेल मिलाप के सम्बन्ध में एक और क्षेत्र की बात की जानी चाहिए। मेल मिलाप करने वाला न केवल दूसरों के साथ मेल मिलाप करने की कोशिश करता है बल्कि वह झगड़ा करने वाले गुटों में भी शान्ति के लिए काम करता है। हम अपने इब्रानी साथियों को जो झगड़ रहे थे अलग करने की मूसा की कोशिश (निगर्मन 2:13, 14) या कलीसिया में मिलकर रहने के लिए पौलुस की दो बहनों को आग्रह पर विचार कर सकते हैं (फिलिप्पियों 4:2)। समय मिला तो हम घर में (देखें नीतिवचन 15:17), कलीसिया में (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:13), समाज में और संस में शान्ति से रहने की आवश्यकता पर बात कर सकते हैं।

चतुराई और बुद्धि की आवश्यकता सहित दूसरों के साथ मेल मिलाप बढ़ाने की अतिरिक्त गुणों की सूची भी दी जा सकती है (देखें नीतिवचन 25:11; याकूब 1:5)। कुछ परिस्थितियों में शान्ति बनाने में हमारा सबसे बड़ा योगदान अपने मुंह बन्द रखकर दिया जा सकता है।[22] सुलेमान ने लिखा, ''जैसे लकड़ी न होने से आग बुझती है, उसी प्रकार जहां कानाफूसी करने वाला नहीं वहां झगड़ा मिट जाता है'' (नीतिवचन 26:20)। धीरज की (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:14) और यहां तक कि सामर्थ और साहस की (देखें 2 कुरिन्थियों 5:6; इफिसियों 6:10) भी आवश्यकता है। अमेरिकी सीनेटर हबर्ट हम्फरे ने एक बार कहा था, ''झगड़ा करने वाले पक्षों में बात चीत तिलकने वाली चट्टानों पर चलकर नदी पार करने की तरह है ...। यह जोखिम भरा है, पर पार जाने का केवल यही तरीका है।''[23]

हम चाहे परमेश्वर के साथ मेल की बात कर रहे हों, या दूसरों के साथ मेल की, यह समझना आवश्यक है कि बिना प्रभु की सहायता के दोनों में से कोई भी सम्भव नहीं है। जो लोग

स्वाभाविक रूप में शान्तिपूर्ण हैं उन्हें समस्याओं से बचने कोशिश करने के बजाय उनसे निपटना सीखनें में परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है। जो लोग झगड़ालू स्वभाव के हैं उन्हें यह देखने में कि शान्ति कितनी आवश्यक है ईश्वरीय समझ की आवश्यकता है। जैसे पहले कहा गया है, ''शान्ति पवित्र आत्मा के फल'' का भाग है (गलातियों 5:22)। परमेश्वर के साथ मेल और दूसरों के साथ मेल तभी मिल सकता है जब हम परमेश्वर के आत्मा और उसके वचन को अपने जीवनों पर अधिकार दे दें (इफिसियों 6:17)।

> हे परमेश्वर, मेल शान्ति प्रिय और मेल कराने वाले न हो पाने के लिए हमें क्षमा कर। हमारी खुदगर्जी को माफ़ कर जो शान्ति में रुकावट बनी। हम पर अपनी करूणा कर ताकि हमें मन और हृदय की शान्ति मिले। फिर हमें मेल कराने वाले बनने का निश्चय करने में सहायता कर। हमें सामर्थ धीरज और प्रेम दे ताकि हम सब लोगों के साथ मेल मिलाप रख सकें। तेरे पुत्र यीशु के नाम में मांगते हैं। आमीन।

सारांश

''धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।'' इसका उलट होगा ''श्रापित हैं वे जो झगड़ा कराने वाले हैं क्योंकि वे शैतान के पुत्र कहलाएंगे।''[24] क्या आप मेल कराने वाले हैं? क्या आप परमेश्वर के पुत्र या पुत्री हैं? क्या आपका परमेश्वर के साथ और दूसरों के साथ मेल है? यदि नहीं तो विश्वास और आज्ञापालन में यीशु के पास आ जाएं।

टिप्पणियां

[1]डॉन हम्फ्रे, *दि बीटीच्यूडस* (बर्लिंगटन, मैसाचुएट्सः इटरनिटी प्रैस, 1969), 60 से लिया गया। [2]रॉबर्ट वेलस, ''बीटीट्यूडस-देअर सिगनिफिकेंस एंड मीनिंग'' (http://members.tripod.com/~robertwells/Beatitudes.html; इंटरनेट; 29 अप्रैल 2008 को देखा गया)। [3]''परमेश्वर की बेटी,'' और ''परमेश्वर की बेटियां'' वाक्यांश बाइबल में नहीं मिलते। ''पुत्रों'' पर ज़ोर शायद इसलिए दिया गया है क्योंकि प्राचीन युग में वारिस केवल पुत्र होत थे। [4]ह्यूगो मेकोर्ड, *हैप्पीनेस गारंटीड* (मरफ्रीस्बोरो, टेनिसीः डेहॉफ पब्लिकेशंस, 1956), 51. मेकॉर्ड के उदहरण KJV से लिए गए है। [5]1 यूहन्ना 3:1, 2 भी देखें जिसमें *teknon* के बहुवचन का इस्तेमाल हुआ है। [6]एक अर्थ में हमें पहले ही गोद लेकर पुत्र बना लिया गया है (रोमियों 8:15), और एक और अर्थ में गोद दिया जाना तब तक पूरा नहीं होता जब तक हम स्वर्ग में नहीं जाते (आयत 23)। इस पर चर्चा ''रोमियों, 3'' *टुथ फ़ॉर टुडे* हिन्दी में ''आशा से जीवित रहना'' पाठ में इस पर चर्चा देंखे। [7]केवल यहीं पर मत्ती 5:9 में नये नियम में 5:9 में ही यह यूनानी शब्द स्पष्ट रूप से मिलता है; पर इसका क्रिया रूप कुलुस्सियों 1:20 में मिलता है, और ''कराना'' और ''मेल'' के लिए यूनानी शब्दों का इस्तेमाल याकूब 3:18 किया गया है। [8]जेम्स एम. टोल्ले, *दि बीटीट्यूड्स* (फुलर्टन, कैलिफोर्नियाः टोल्ले पब्लिकेशंस, 1966), 68. [9]डब्ल्यू. ई. वाइन., मैरिल एफ़. अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्लेः थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 464. [10]विलियम बार्कले, *दि गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* अंक 1, दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फियाः वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1958), 103.

[11]ऐसा ही एक उदाहरण किसी बच्चे को बीमारी रोकने या उसके इलाज के लिए टीका लगाना है। मुझे नहीं मालूम कि कोई बच्चा गोली खाना पसन्द करेगा। [12]कोय डी. रोपर, ईमेल से, 13 सितंबर 2006. [13]जहां आप रहते हैं उससे मेल खाने के लिए इस विचार को बदल लें। [14]अमेरिका में इस्तेमाल की जाने वाली अभिव्यक्ति है ''समस्या पर बैंडेड लगाना।'' [15]एक उदाहरण के रूप में प्रेरित पौलुस, मालिक फिलेमोन और गुलाम उनेसिमुस पर विचार करें

जिनमें सभी प्रिय भाई हैं (देखें फिलोमन 1, 16; कुलुस्सियों 4:9; 2 पतरस 3:15)। [16]यदि आप इसका इस्तेमाल क्लास में करते हैं तो चर्चा के लिए यह अच्छा प्रश्न हो सकता है। [17]लिराय ब्राउनलो की पुस्तक *सम डज़ एण्ड ''डोन्टस फॉर द क्रिश्चियन''* (फोर्ट वर्थ, टैक्सस: लिराय ब्राउनलो पब्लिकेशंस, 1951), 53-57 में ''उन बातों का पीछा करना जो मेल बढ़ाती हैं'' पर एक पाठ है। [18]हमें ''परमेश्वर के पुत्र'' बनाने वाला वास्तव में व्यवहार है। मत्ती 5:43-45 को मत्ती 5:9 की ''बेहतरीन व्याख्या'' कहा गया है। मत्ती 5:45 में ''पुत्र'' शब्द उसी यूनानी शब्द से लिया गया है जिससे मत्ती 5:9 वाला ''पुत्र'' है। [19]डी. मार्टिन लॉयड-जोन्स, *स्टडीज़ इन द समरन ऑन द माउंट,* अंक 1 (ग्रैंड रैपिड्स मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 119, 122. [20]मेकोर्ड, 47.

[21]''मनुष्य'' शब्द का इस्तेमाल यहां सामान्य अर्थ में किया गया है। [22]जब आप अपने मित्र से कुछ ऐसी कठोर बात करते हैं जा किसी दूसरे ने उसके विषय में कही थी तो आप सच्चे मित्र नहीं होती (लॉयड-जोन्स, 124)। [23]रॉबर्ट शुलर, *दि बी (हैप्पी) एटीट्यूडस* (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1985), 169 में उद्धृत। [24]मेकोर्ड, 46.